आदिवासी महिलाएं : राष्ट्र निर्माण में सहभागिता

अनिल कुमार
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

प्रो० शैलजा गुप्ता
विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग
दयानंद वैदिक कॉलेज,उरई,जालौन

सारांश

आज के समय में प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा और तकनीकी का महत्व है और जीवन के प्रत्येक कार्य में शिक्षा और तकनीकी सफलता का प्रथम आयाम है। आज के समय लड़कियाँ एवं महिलायें प्रत्येक कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है और पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर देश और समाज के विकास में अपना योगदान दे रही है। देश का सबसे बड़ा महिला संगठन क्रान्तिकारी आदिवासी महिला संगठन है, जो आदिवासी महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा, सुरक्षा आदि के लिए निरन्तर कार्य कर रहा हैं। उत्तर प्रदेश में अनेक जनजातियाँ निवास करती है उन्हीं में से एक है सहरिया जनजाति। यह जनजाति आदिवासी की श्रेणी में आती है। यह कोलरियन परिवार की जनजाति है। फारसी भाषा में सहर का अर्थ है जंगल। यह जनजाति जंगलों में निवास करती है, इसलिए इन्हें सहरिया जनजाति कहा जाता है। इनकी वसाहट एक विशेष प्रकार की होती है जिसे सहराना कहा जाता है। कुछ विद्वानों ने सहरिया शब्द की उत्पत्ति सेहर से बतायी है जिसका अर्थ जंगल होता है। जनजातियों को बेरियर एल्विन ने आदिम जाति, ठक्कर बापा, रिसले, सेजिविक, मार्टिन, जयपाल सिंह ने आदिवासी एल०पी० विद्यार्थी ने जनजातियों के लिए अनुसूचित शब्द सुझाया। जी०एस० घुर्ये ने इनके लिए अनुसूचित जनजातियाँ नाम प्रस्तावित किया जो कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद (३४२) के अन्तर्गत स्वीकार किया गया। सहरिया जनजाति के सामाजिक एवं कानूनी अधिकार, आधुनिक प्रशासनिक प्रणालियों में विलोपित हो चुके है। जनजातियों की इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखकर भारतीय संविधान ने इनके विकास के लिए विशेष प्रावधान किये है। सहरिया जनजाति का अपना एक विशेष परिदृश्य होता है। सहरियाओं की जीवन शैली विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था के आधार पर चलती हैं। सामाजिक ढाँचे में सहरियाओं की आंतरिक व्यवस्था कायम रहती है और सभी लोगों को नियम निर्देश व्यवस्था का पालन करना होता हैं।

परिचय

सहरिया जनजाति की संस्कृति की एक अलग पहचान होती है यह अपनी प्राचीन आदिम सभ्यता के लिए जानी जाती है जहाँ एक और लक्षित समूह की सामाजिक आर्थिक शैक्षिक व्यावसायिक स्थिति का अध्ययन शोधार्थी का एक उद्देश्य होता है। दूसरी ओर उनकी अनुवांशिक विशेषताओ का अध्ययन जो कि सामाजिक आर्थिक स्थिति को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारको मे एक है अनुवांशिक विशेषताओं के अध्ययन से समाज के वर्तमान सत्य को जाना जा सकता है साथ ही उसकी अन्य क्षेत्रो से एवं स्थानीय समाज से अनुवांशिक अभिगमन को जानकर भावी परिस्थिति के सम्वन्ध में एक रुपरेखा बनाई जा सकती है जिससे सुधारात्मक उपायो को लागू किया जा सकता है और सहरिया जनजाति की सामाजिक, आर्थिक, स्थिति के अध्ययन से विकास की भावी दिशा क्या होगी यह निश्चित किया जा सकता है।

जनजातियाँ आधुनिक सभ्यता से दूर घने जंगलो मरूस्थलो दुर्गम, पर्वतों में निवास करती है। जनजातियां हमारी सभ्यता के वे अंग जो विकास की प्रक्रिया में पिछड़ गये है और अपने विचारों एवं जीवन पद्धति में हमारे विकास की प्रक्रिया छुपाये वे इस तथ्य को इंगित करते हे कि हम इस सभ्यता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने के बाद यह ध्यान रखे कि हमारे पूर्वज किस स्थिति में है। आधुनिक सभ्यता से पिछडे ये हमारे पूर्वज अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे है क्योकि इनके सामाजिक एवं कानूनी अधिकार आधुनिक प्रशासनिक प्रणालियों में विलोपित हो चुके हैं। अतः इसी को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय संविधान ने इनके विकास के लिए विशेष प्रावधान किये है।

ऐतिहासिक परिदृश्य

इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया के अनुसार ‘‘जनजाति समान नाम धारण करने वाले परिवारो का एक संकलन है जो समान बोली बोलते है। एक ही भूखण्ड पर अधिकार का दावा करते हे रॉल्फ पिडिगटन ने जनजातियो को परिभाषित करते हुए लिखा है कि हम एक जनजाति की व्यक्तियो के एक समूह के रुप मे व्याख्या करते है जो समान भाषा बोलते हो समान संस्कृति समूह हे समान व्यवसाय है राजनीतिक संगठन है अन्तर्विवाह के नियम का पालन करता है।

सहरिया जनजाति भारत की प्राचीनतम जनजातियो मे से एक है सामाजिक विकास के ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यदि विश्लेषण किया जाये तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि सहरिया जनजाति का संबंध प्रागैतिहासिक

काल से है जब मनुष्य जंगली जानवर से सामाजिक पशु बनने की प्रक्रिया से गुजर रहा था और जंगली जानवरों के साथ रहता था।

सामाजिक विकास के चरणों में अनेक लोग आगे बढ़ गये और नवीन ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन और समाज को विकसित करते चले गये मनुष्य जंगल से बाहर आया और ग्रामो नगर शहरों की स्थापना की और अपने जीवन को सरल सुगम बनाने के लिए अनेक नवीन चीजो का निर्माण किया किन्तु विकास की इस दौड़ में बहुत से समूह पिछड़ गये और अपनी परंपरागत जीवन शैली में जीवन व्यतीत करते रहें जिससे इस क्षेत्र मे विकसित और अविकसित सामाजिक व्यवस्था कायम हो गयी. जिन लोगो ने तत्कालीन वयवस्था के विरुद्ध जाकर कुछ नया करने का दृढ़ निश्चय किया और एक नया मार्ग चुना। उन्हें निश्चित रूपसे तत्कालीन जनसमुदाय के विरोध का सामना करना पड़ा होगा. किन्तु वे रूके नही होगे और नवीन प्रणाली को आगे बढ़कर उन्होने अपनाया होगा जिसके कारण बहुत संभव है कि उन्हे अपने समुदाय (कवीले) से सम्भवतः निकाल दिया गया होगा और ये लोग अपने समुदाय को छोडकर नवीन स्थानो की ओर चले गये होगे और नये ग्रामो का निर्माण किया होगा।

सहरिया जनजाति के अनेक परिवार हिन्दु समाज के अभिन्न रूप से ग्रामो में निवास कर रहे हे और हिन्दू समाज की अनुसूचित जातियों में अपने आप को समाहित कर लिया है ऐतिहासिक विश्लेषण से विदित होता है कि सहरिया जनजाति अत्यन्त प्राचीन है। इसके पुरातात्विक साक्ष्य इसकी प्रमाणिकता बताते है साहित्यिक साक्ष्यो से भी सहरिया जनजाति की प्राचीनता का पता चलता है।

इस प्रकार सपष्ट है कि सहरिया जनजाति अत्यन्त प्राचीन है। ‘यह भारत की मूल निवासी है तथा भारत कि आदितम मानव जाति का प्रतिनिधित्व भी करती है।

सहरिया जनजाति के समाज में स्त्रियों का विशेष महत्व है। सहरिया समाज में स्त्रियाँ सहरिया जनजाति की मर्यादाओं का पालन करती है। सहरियों में घुघंट प्रथा प्रचलित है। सहरिया समाज में स्त्रियाँ लहगां, घाघरा, धोती, सलुका पहनती है। सहरिया स्त्रियों को आभूषण और श्रृंगार का अधिक शौक है।

आदिवासी महिलाएँ : राष्ट्र निर्माण में सहभागिता

राष्ट्र निर्माण राज्य की शक्ति का उपयोग करके राष्ट्रीय पहचान का निर्माण करना है। राष्ट्र निर्माण का उद्देश्य राज्य की भीतर लोगों को एकजुट करना है। राष्ट्र निर्माण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से

बहुसंख्यकों का निर्माण होता है। राष्ट्र निर्माण में सामाजिक सद्भाव और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढाँचे के विकास का उपयोग शामिल हो सकता है।

भारत सरकार ने २००२ में राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग का गठन किया। यह आयोग सहरिया जनजाति के सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक कदम उठाने, सलाह एवं सुझाव देता है और इसके सार्थक परिणाम भी देखने को मिल रहे है। सहरिया जनजाति की विभिन्न समस्याओं एवं आवश्यकताओं के लिए आयोग द्वारा आवश्यक कार्य किये जा रहे है। प्रशासन भी सहरिया जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनैतिक विकास के लिए प्रयासरत है। केन्द्र एवं राज्य सरकार प्रत्येक स्तर पर सहरिया जनजाति के सर्वागीण विकास के लिए कार्य कर रही है एवं अन्य स्थानीय निकायों में भी स्थान आरक्षित किये गये है। संविधान में आदिवासी समुदाय को कुछ विशेष कानूनी प्रावधान प्रदान किये है। कई समुदाय शिक्षा रोजगार स्वास्थ्य, सुरक्षा, भूमि, जैसे बुनियादी अधिकारों तक पहुँचने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। जनजातीय समुदायों में इन अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए आन्दोलनों और विरोध प्रदर्शनों का एक लम्बा इतिहास रहा है और आदिवासी महिलाओं ने इन संघर्षों महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

१. **द्रोपदी मुर्मू-** द्रोपदी मुर्मू भारत की १५वीं और वर्तमान राष्ट्रपति के रुप में कार्यरत एक आदिवासी भारतीय राजनीतिज्ञ है। वह राष्ट्रपति पद संभालने वाली देश की सबसे कम उम्र की राष्ट्रपति है। मुर्मु भारत की आजादी के बाद पैदा होनी वाली पहली महिला राष्ट्रपति है। वह भारत के राष्ट्रपति के रुप में चुनी जाने वाली जनजातीय समुदाय से संबंधित पहली महिला है। इनका जन्म २० जून, १९५८ में उड़ीसा के मयूरगंज जिला गाँव वैदापोसी के संताली परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम विरंचि नारायण टुडु था। इनके पिता और दादा दोनों ही अपने गाँव के प्रधान रहे थे। इन्होंने श्याम चरण मुर्मु से विवाह किया था। इनके दो बेटे और एक बेटी है। इन्होंने अध्यापक के रुप में अपना प्रारम्भिक जीवन शुरू किया और १९९४-१९९७ तक राय रंगपुर में शिक्षक के रुप में कार्य किया। इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव में प्राप्त की उसके बाद उच्च्च शिक्षा के लिए भुवनेश्वर आ गयी और रमादेवी महिला कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने अध्यापिका के रुप में कार्य करते हुए काफी सफलता प्राप्त की। इसके बाद १९९७ में पंचायत परिषद का चुनाव जीत कर अपना कदम राजनीति में रखा। धीरे-धीरे ये भारतीय राजनीति में आ गयी इन्होंने भाजपा पार्टी की अनुसूचित जनजाति महिला मोर्चा के उपाध्याक्ष के रुप में राजनैतिक कार्य प्रारम्भ किया। ये आदिवासी मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य भी रही। द्रोपदी मुर्मू उड़ीसा के मयूर गंज जिले की रायरंगपुर सीट से २००० और २००९ में भाजपा के टिकट पर २ बार विधायक बने। इन्हें २०००-२००४ के

वाणिज्य परिवहन संसाधन मंत्री बनाया गया। सन् २००७ में उड़ीसा विधानसभा के सर्वेश्रेष्ठ विधायक के लिए नीलकंठ पुरस्कार प्रदान किया गया। द्रोपदी मुर्मू २०१५ में झारखण्ड की राज्यपाल बनायी गयी। आदिवासी महिला के रुप में वह देश के किसी भी राज्य की पहली महिला आदिवासी राज्यपाल बनायी गयी थी।

२. **कल्पना चौधरी-** कल्पना चौधरी पूर्ण महिला सभरस ग्राम पंचायत की सरपंच है जो सूरत जिले के गुजरात राज्य में है। कल्पना चौधरी को गांव के सभी सदस्यों द्वारा सर्वसम्मत्ति से चुना गया था। कल्पना ने अपने गांव में बड़े पैमाने पर प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल खुलवाये जिसमें गांव के बालक/बालिकायें शिक्षा प्राप्त कर रहे है और शिक्षा की गुणवत्ता में बड़े पैमाने पर कार्य कर रही है। कल्पना चौधरी ने गांव की महिलाओं के लिए अनेक सहायता समूह का गठन किया जिनमें ३० महिलाओं की संख्या निश्चित रहती है। ये महिलायें घरेलू कुटीर उद्योग के द्वारा रोजगार प्राप्त कर रही है। कल्पना चौधरी विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से इन महिलाओं को रोजगार के लिये ऋण उपलब्ध करवाती है, जिससे ये महिलायें स्वयं का रोजगार कर सकती है। प्रकृति के हिस्से के रुप में ये महिलायें विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्यों में अपना योगदान देती हैं। ये महिलायें मुख्य रुप से आदिवासी भोजन पकाकर अपना स्टॉल लगाकर उसकी बिक्री करती हैं। समूह के द्वारा जो भी धनराशि एकत्र होती है वह प्रत्येक महिला में समान रुप से बांट दी जाती है। कल्पना बताती है कि कैसे प्रकृति महिलाओं के लिए एक साथ आने और एक दूसरे से सीखने से और सुरक्षित रोजगार का माध्यम कैसे बन सकती है। इन कार्यक्रमों के द्वारा महिलाओं में आत्मविश्वास आया है और आदिवासी महिलायें आर्थिक रुप से निर्भर हो रही है।

३. **आमना खातून-** आमना खातून गुर्जर समुदाय से है जो उत्तराखण्ड में फैली एक खानाबदोस आदिवासी जनजाति है। बह अपने समुदाय में लड़कियों और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कार्य कर रही है और महिलाओं का ऐसा भविष्य निर्माण करना है जिसमें वह अपने निर्णय स्वयं ले सके। आमना ने महिलाओं के दृष्टिकोण मे परिवर्तन करके उन्हें आत्मनिर्भरर बनाया है। सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से महिलायें स्वयं का विकास कर रही है। सरकार की विभिन्न सहकारी समिति में महिलाओं को चुना जाता है जिससे ये महिलायें अपने जैसी अन्य महिलाओं को अपने कार्य का अनुभव के बारे में बताकर उन्हें प्रेरित करके आगे बढ़ने में मदद् करती है।

४. **जुलियाना पेड्रो फर्नांडीज-** कर्नाटक के कारवार जिले में जंगलों से घिरे गाडगेरा गांव में रहती है ये सिद्धी समुदाय से सम्बन्धित है। जुलियाना अपने गांव में ३० से ४० महिलाओं का एक समुदाय बनाती है और जंगल में जो भी प्राकृतिक संसाधन मिलते हैं उनसे स्वयं का रोजगार करते हैं। सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं में महिलाओं की भागीदारी निश्चित की जाती है। इन महिलाओं के पास शिक्षा और राजनैतिक भागदारी होती है। जुलियाना का दावा है कि यदि आदिवासी महिलाओं को शासन प्रशासन, राजनैतिक भागीदारी में समान रुप से शामिल किया जाये तो ये महिलायें स्वयं का एवं गांव का विकास कर सकती हैं। सिद्धी गांव में तालूका पंचायत सदस्य चुनाव में महिलाओं को नामांकित किया जाता है। उन्हें वोट डालने वोट का महत्व के बारे में बताया जाता है। राजनैतिक भागीदारी के महत्व को पहचानते हुए जुलियाना अपने समुदाय की आवाज बनकर महिलाओं को जागृत करने का कार्य कर रही है। वह महिलाओं के पहचान दस्तावेज हासिल करने में मदद् कर रही है और अनेक महिलाओं को स्थानीय शासन निकायों में चुनावों में पंजीकृत करवाकर प्रोत्साहित कर रही है, इसके अलावा वह अपने समुदाय को एक जुट करने का प्रयास कर रही है। जुलियाना का मानना है कि महिलाओं को राजनैतिक स्तर पर अवसर प्रदान किया जाये तो महिलायें अपने गांव और जिले का विकास कर सकती हैं।

५. **आलिया जान-** आलिया जान कश्मीर के अनंतनाग जिले में भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष एवं अपने क्षेत्र की आदिवासी जनजाति महिला मोर्चा की अध्यक्ष है। ये अपने समुदाय के समग्र विकास के लिए काम कर रही है। विशेषकर लड़कियों एवं महिलाओं की शिक्षा, सुरक्षा, रोजगार और राजनैतिक भागीदारी। इनका मानना है कि ग्रामीण क्षेत्र में लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। कश्मीर में बर्फवारी और ठण्डे तापमान में स्कूल, कॉलेज जाना सबसे कठिन कार्य है जिससे लड़कियों की शिक्षा प्रभावित होती है। आलिया का मानना है कि महिलाओं को शिक्षित किया जाये जिससे वह अपने समुदाय की अन्य महिलाओं को शिक्षा प्रदान कर सके क्योंकि एक शिक्षित महिला अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होगी और शासन में अपनी भागीदारी निश्चित कर सकेगी।

निष्कर्ष

सहरिया जनजाति की महिलाओं के विकास में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू निरन्तर कार्य कर रही है। वह भारत देश की प्रथम आदिवासी महिला राष्ट्रपति है। उन्होंने आदिवासी महिलाओं के सम्मान, गौरव को

बढ़ाया है। जो आदिवासी महिलाओं के विकास का सबसे बड़ा प्रतीक है। कल्पना चौधरी गुजरात राज्य के सूरत जिले में महिलाओं के विकास के लिए निरन्तर कार्य कर रही है। वह बालिकाओं की शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, स्वरोजगार के लिए निरन्तर प्रयासरत है। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ऋण दिलाकर कुटीर उद्योग, लघु उद्योग लगवाकर आर्थिक रूप से मजबूत बना रही है। इन कार्यक्रमों से आदिवासी महिलाओं के आत्म विश्वास में वृद्धि हो रही है और वे निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है।

जुलियाना पेड्रो फर्नांडीज कर्नाटक आदिवासी महिलाओं के विकास के लिए समूह बनाकर कार्य कर रही है और प्राकृतिक संसाधनों से जो भी प्राप्त होता है उनसे स्वरोजगार करके महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बना रहे हैं। इनका मानना है कि आदिवासी महिलाओं को राजनैतिक, शासन, प्रशासन में अवसर मिलेगे तो अपने गाँव, तालूका और समाज के विकास में योगदान दे सकती है। ये महिलाओं की राजनैतिक आवाज बनकर महिलाओं को स्थानीय निकाय चुनाव, पंचायत चुनाव के लिए प्रेरित कर रही है जिससे राजनैतिक जीवन में आदिवासी महिलाओं की भागेदारी सुनिश्चित की जा सके।

आमना खातून उत्तराखण्ड की आदिवासी बालिकाओं, महिलाओं के विकास के लिए निरन्तर प्रयासरत है। ये महिलाओं के लिए एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहती है जिसमें उन्हें समान अधिकार, सुरक्षा, रोजगार प्राप्त हो सके। विभिन्न सहायता समूह का निर्माण करके महिलाओं के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाकर आत्मनिर्भर बनाया जा सके। सरकार ने आदिवासी सहरिया जनजाति की महिलाओं को स्वावलम्बन की राह दिखायी है उन्हें स्वयं सहायता समूह के माध्यम से आर्थिक रूप से मजबूत किया जा रहा है। ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत आदिवासी समुदाय की महिलाओं को समूह से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया जा रहा है जिससे सहरिया जनजाति की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। सहरिया जनजाति की सोनी चौहान १०-१० महिलाओं के साथ मिलकर ‘जय दुर्गा स्वयं सहायता समूह’ का गठन किया है जिससे बैंक द्वारा ऋण मिलता है। जिससे उन्होंने फल, फूल, सब्जी की नर्सरी की शुरूवात की है, जिसमें बड़े पैमाने पर इनकी पैदावारी हो रही है। अब उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है। राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अनुसार सहरिया जनजाति की अनेक महिलाओं को मुख्य धारा से ‘शिव महिला स्वयं सहायता समूह’ के द्वारा जोड़ा गया है, जिसमें गाय, बकरी, भैंस पालन करके अपनी आजीविका में वृद्धि की है। बूटी देवी सामाजिक संस्था चाइल्ड फण्ड इंडिया के माध्यम से आदिवासी बालिकाओं और महिलाओं को शिक्षित करने का कार्य कर रही है। धीरे-धीरे इस संस्था के द्वारा आस-पास के गाँवों की बालिकाओं/महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। इस प्रकार आदिवासी महिलायें समाज, देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। शिक्षित महिलायें किसी भी राष्ट्र के निर्माण का मुख्य केन्द्र

बिन्दु होती है। लोकतन्त्र में महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त है जिससे आदिवासी महिलायें विभिन्न अवसर पाकर अपने जीवन को विकास की मुख्य धारा से जोड़ सकती है और सामाजिक विकास, नैतिक विकास में योगदान दे सकती हैं।

सन्दर्भ सूची

क्र.सं.	*लेखक का नाम*	*पुस्तक का नाम*
१.	शर्मा, नीरू एवं शर्मा, कुमार आनन्द	सहरिया जनजाति एक सामाजिक विश्लेषण, नई दिल्ली
२.	हेमलता	सहराना में सहरिया जनजाति का जीवन, प्रेरणा प्रकाशन, दिल्ली
३.	गुप्ता, मंजू	सहरिया जनजातियों का सामाजिक, आर्थिक उत्थान, नई दिल्ली
४.	जैन, सी०के० एवं शर्मा, एस०के०	ट्राइबल्स ऑफ मध्य प्रदेश डेबिटेड एण्ड इकॉनोमी, भोपाल
५.	जैन, श्रीचन्द्र	आदिवासियों के बीच, दिल्ली किताबघर
६.	समाचार पत्र	सहरियों की संघर्ष गाथा, नई दिल्ली
७.	जनमत स्वर	जनजातीय और लोक संस्कृति, भोपाल

वेबसाइटस

1. *sodhganga@inflibnet.ac.in*
2. *www.google.com*
3. *www.wikipedia.org.in*
4. *www.upgovt.in*
5. *www.mpgovt.in*
6. *www.rajgovt.in*

Contributors Details:

अनिल कुमार
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी